I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Review Article

स्वतंत्रता समर और हिन्दी भाषा साहित्य की भूमिका

संतोश कुमार त्रिपाठी
हिन्दी विभाग, जवाहर लाल नेहरु स्मा0 महाविद्यालय, महराजगंज, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * संतोश कुमार त्रिपाठी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.14241942

Abstract

यह शोध पत्र भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी भाषा और साहित्य की केंद्रीय भूमिका का विश्लेषण करता है। इसमें महात्मा गांधी, मैथिलीशरण गुप्त और माखनलाल चतुर्वेदी जैसे महान स्वतंत्रता सेनानियों और हिंदी लेखकों के योगदान को रेखांकित किया गया है, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से जनमानस में देशभक्ति और एकता की भावना जागृत की। इन विभूतियों ने अपनी कृतियों के माध्यम से स्वतंत्रता के आदर्शों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया, औपनिवेशिक विचारधाराओं को चुनौती दी और सामूहिक कार्रवाई के लिए प्रेरित किया। इस शोध में यह भी चर्चा की गई है कि कैसे हिंदी इस युग में एकता की भाषा के रूप में उभरी और क्षेत्रीय व सांस्कृतिक बाधाओं को पार किया। गीतांजलि, झांसी की रानी और क्रांतिकारी गीतों जैसे साहित्यिक योगदानों का विश्लेषण किया गया है, जिन्होंने लोगों के दिलों में साहस और आशा का संचार किया। इसके साथ ही, उस समय की वैचारिक धाराओं पर प्रकाश डाला गया है, जहां हिंदी ने औपनिवेशिक दमन का विरोध करने और राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अध्ययन यह रेखांकित करता है कि हिंदी साहित्य ने सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के प्रेरक तत्व के रूप में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, और यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम व सांस्कृतिक पुनर्जागरण के व्यापक संदर्भ में इसकी स्थायी प्रासंगिकता को दर्शाता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 21-08-2024
- **Accepted:** 25-09-2024
- **Published:** 29-11-2024
- **IJCRM:**3(6); 2024: 109-111
- **©2024, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Manuscript

संतोश कुमार त्रिपाठी. स्वतंत्रता समर और हिन्दी भाषा साहित्य की भूमिका. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary.2024; 3(6):109-111.

KEYWORDS: राष्ट्रीय आंदोलन, हिंदी भाषा, अखंडता, स्वतंत्रता संग्राम

INTRODUCTION

विश्व के किसी भी देश की पहचान उसके राष्ट्र की भाषा और वहाँ की संस्कृति से होती है। वैसे ही हमारे देश की पहचान भी इन्हीं सभी विशेषताओं के कारण है। भारत एक भाषाई रूप से विविध राष्ट्र है। यहाँ प्रत्येक प्रांत की अपनी-अपनी भाषा, वेशभूषा और सांस्कृतिक पहचान है। विविधता में एकता ही भारत की शक्ति है। भाषाओं की इस विविधता पूर्ण वातावरण में हिंदी भाषा का एक विशेष स्थान है, जो राष्ट्र की एकता का मूल तत्व है। भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने पर पूरा देश इसे "अमृत महोत्सव" के रूप में मना रहा है, जिससे देशवासियों को अपने कर्तव्यों, देशप्रेम, देश की एकता और अखंडता का एहसास हो सके। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदी भाषा की सहभागिता के बारे में हम कहना चाहते हैं कि भारत यदि शरीर है तो हिंदी उसकी आत्मा है। भाषा केवल विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम ही नहीं है, बल्कि विचारों की जन्मदात्री भी है। आंतरिक भावनाओं को एक स्वरूप देने में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। भाषा के माध्यम से जब विचारों की अभिव्यक्ति होती है, तो सभी संस्कृतियों में एकसमानता आती है। स्वतंत्रता के बाद हमारे देश के संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर 1950 को हिंदी भाषा को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया, लेकिन इसका प्रभाव स्वतंत्रता से पहले हुए अनेक राष्ट्रीय आंदोलनों में दिखने लगा था। भारत के उत्तरी प्रांतों में जहाँ हिंदी जनभाषा के रूप में अपना स्थान प्राप्त कर चुकी थी, वहीं दक्षिण भारत में भी सी. राजगोपालाचारी जैसे विद्वानों ने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के माध्यम से हिंदी को जनसामान्य तक पहुँचाने का कार्य किया। उस समय के रचनात्मक कवियोंए लेखकों, पत्रकारों

© 2024 संतोश कुमार त्रिपाठी. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

और नाटककारों ने भी हिंदी का भरपूर उपयोग किया और स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी को एक शस्त्र के रूप में प्रयोग किया।
लोकतंत्र की लड़ाई में हिंदी जन-जन की भाषा बनकर सामने आई और भारत की सभी क्षेत्रीय भाषाओं में अग्रणी रही। राष्ट्रीय आंदोलन में जब महात्मा गांधी ने आगे कदम बढ़ाया, तब धीरे-धीरे भारत के विभिन्न प्रांतों में हिंदी का प्रचार-प्रसार होने लगा। गांधी जी अपनी सभाओं में मुख्यतः हिंदी में ही भाषण दिया करते थे। उनकी मातृभाषा न होने के बावजूद हिंदी को जनमानस तक पहुँचाने का सराहनीय कार्य उनके द्वारा किया गया।
कई आंदोलनों में वे अधिकांशतः हिंदी के माध्यम से ही अपनी बात रखते थे। उनका प्रयास था कि जितने भी राष्ट्रीय आंदोलन होंए वे सभी हिंदी में भी जाने जाएँ। इससे प्रतीत होता है कि देश को स्वतंत्रता दिलाने में हिंदी भाषा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
गांधी जी ने भाषा के प्रसार में अंग्रेज़ी के मुकाबले भारतीय भाषाओं के सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न के संदर्भ में कहा कि हमें अपनी मातृभाषा को सार्वभौमिक बनाना चाहिए। वे सभाओं में कहते थे:

"मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने का संकल्प लें। यह भाषा जनभाषा है, क्योंकि भारत भूमि पर सदियों से हिंदी ही (चाहे जिस रूप में रही हो) एक ऐसी भाषा रही है, जो पूरे भारतवर्ष में लिखी, पढ़ी, बोली या समझी जाती रही है।"

हिंदी ने भारतीय राष्ट्रवाद के स्वरूप को साकार करने में एक महान कारक के रूप में भूमिका निभाई है; यानी हिंदी ही भारत के जन-जन की भाषा रही है।
स्वतंत्रता के इस महायज्ञ में समाज के प्रत्येक वर्ग ने अपने-अपने तरीके से योगदान दिया। इस स्वतंत्रता के युग में हिंदी साहित्यकारों और लेखकों ने भी भरपूर योगदान दिया। क्रांतिकारियों से लेकर देश के आम लोगों तक जोश भरने का जो कार्य हुआ, उसका माध्यम हिंदी ही थी। इश्वरीप्रसाद जी जैसे लेखकों ने "रंगभूमि", "कर्मभूमि" जैसे उपन्यास, भारतेंदु ने भारत-विदेश नाटक, जयशंकर प्रसाद ने "चंद्रगुप्त" जैसे हिंदी नाटकों के माध्यम से सभी के भीतर राष्ट्रप्रेम की भावना को जागृत करने का कार्य किया। वीर सावरकर ने हिंदी के माध्यम से ही 1857 के पहले स्वतंत्रता संग्राम में लोगों के भीतर क्रांतिकारी भावनाएँ उत्पन्न कीं। उसी प्रकार काका कालेलकर ने "गीतांजलि" के माध्यम से लोगों में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाई। हिंदी साहित्य की अनेक कहानियों और उपन्यासों, साथ ही कविताओं ने लोगों के भीतर देशप्रेम का संचार किया। इन्हें पढ़कर लोग घरों से बाहर निकल आए। स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। भारतेंदु युग में तो साहित्यकारों ने स्वतंत्रता संग्राम और उस समय की सेनाओं की भूमि-भूमि प्रशंसा करते हुए भारत के उज्ज्वल भविष्य में लोगों में विश्वास जगाने का कार्य किया। भारतेंदु ने स्वयं लिखा:

जो भाषा उन्नति करे,
सब उन्नति के मूल।
बिन जो भाषा ज्ञान के,
मिटे न गति को शूल।"

इस समय के लेखकों ने अंग्रेजों की शोषणनीति का खुलकर विरोध किया। सरल हिंदी साहित्य के माध्यम से भारतीयों पर हो रहे अन्याय और अत्याचार का विरोध किया। द्विवेदी युगीन कवियों और लेखकों ने एक कदम और आगे बढ़कर स्वतंत्रता संग्राम में अपनी लेखनी द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, माखनलाल चतुर्वेदी जैसे राष्ट्रभक्त लेखकों ने अपनी रचनाओं और लेखनी से आम जनता के भीतर राष्ट्रप्रेम की भावना को जगाया और स्वतंत्रता आंदोलन का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित किया। मैथिलीशरण गुप्त ने भारत-भारती सुभद्रा कुमारी चौहान ने झाँसी की रानी जैसी कविताओं से इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन लेखकों ने भारतीयों को स्वतंत्र भविष्य की याद दिलाते हुए वर्तमान और भविष्य को सुधारने का प्रयास किया।

मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है:

"हम क्या थे, क्या हैं, और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें मिलकर ये समस्याएँ सभी।
जिन्हें न स्वदेश गर्व और स्वदेश का सम्मान है,
वह न उन्नत हैं, न शुद्ध, मृत समान हैं।"

बंदेप्रसाद पंत ने अपनी मातृभाषा छोड़कर हिंदी में ही राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत गीत "वंदे मातरम्" के माध्यम से लोगों के हृदय में उमंग ला दी। अब किसी को गुलामी स्वीकार नहीं थी। सुभद्रा कुमारी चौहान की "झाँसी की रानी" कविता को भुला कौन सकता हैए जिसने अंग्रेजों के दंभ को झुका कर रख दिया। वीर सैनिकों में राष्ट्रप्रेम का व्यापक संचार करते हुए जोश भरने वाली यह उत्कृष्ट हिंदी साहित्यिक रचना आज भी प्रासंगिक है।

"फूल नहीं थे जोश में उठे जवान,
बढ़े भारत में भी आए, फिर भी नई जान।"

माखनलाल चतुर्वेदी ने वतन की बलि वेदी पर शहीद हुए वीर सपूतों के प्रति श्रद्धांजलि दिखाते हुए बलिदान को सर्वोपरि माना। उन्होंने एक पुष्प के माध्यम से अपनी बात को जिस स्पष्टता और तीव्रता के साथ कहा है, वह बहुत प्रभावशाली है:

"चाह नहीं मैं सुर्जोयला के
गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं मैं चमनबाड़ी में
पूजित देवों पर चढ़ जाऊँ।
मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जाएँ वीर अनेक।"

इसी प्रकार, राष्ट्रीय धारा और आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने वीरों के प्रति लिखा है:

"जले आज उनकी जय बोल।
जल उठी थी काशी-बनारस,
गाँधी जिनकी खड़ाऊँ पर नाचें बिना साज के बोल।
जले आज उनकी जय बोल।"

© 2024 संतोश कुमार त्रिपाठी. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

ऐसे राष्ट्रकवियों ने अपनी भाषा और साहित्य के माध्यम से अपने दायित्व को समझा और राष्ट्र जागरण एवं राष्ट्रोन्नति को अपनी लेखनी का एक उद्देश्य और कर्तव्य माना। इस प्रकार स्वतंत्रता के यज्ञ में हिंदी भाषा और साहित्य का अपना अमूल्य योगदान रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भाषा हिंदी – 37वां अंक (2014)
2. महात्मा गांधी और हिंदी नवजागरण – डॉ. पुष्पा कश्यप
3. हिंदी का विकास और महात्मा गांधी – डॉ. मीना गौड़
4. एक था मोहन (गांधी कथा)

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2024 संतोश कुमार त्रिपाठी. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/